उपन्यास के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

सत्यवीर

'उपन्यास' आधुनिक गद्य विधाओं में एक महत्त्वपूर्ण विधा है जो महाकाव्य और कहानी दो विधाओं के कलेवर को आत्मसात किये हुए हैं। उपन्यास व्यापक जीवनसन्दर्भ व युगबोध की कथा प्रस्तुति है, जिसका स्वरूप प्रबन्धात्मक होता है। उपन्यास और समाजशास्त्र एक ही युग के समान भौतिक और वैचारिक परिवेश की उपज है। अपने समाज, समय और इतिहास की प्रक्रिया से परिभाषित मनुष्य ही उपन्यास रचना का लक्ष्य है और समाजशास्त्रीय विश्लेषण का भी। साहित्य के समाजशास्त्र का मुख्य लक्ष्य है साहित्य की सामाजिक भूमि और सामाजिक भूमिका का विवेचन। समाज से उपन्यास के सम्बन्ध के अनेक सतर और रूप हैं। फिल्म के बाद उपन्यास ही आधुनिक युग का सर्वाधिक प्रतिनिधि कला रूप है। उपन्यास के सामाजिक आधार, अर्थ और अभिप्राय की खोज ने उसके समाजशास्त्रीय विश्लेषण को प्रमुखता प्रदान की है।